चमक

बच्चों की कूची, बच्चों की कलम

एकलव्य का प्रकाशन

बच्चों की कूची, बच्चों की कलम

अ. सुमित्रा देवी, सातवीं

एकलव्य का प्रकाशन

टेमरु

Temru

बच्चों की कूची, बच्चों की कलम

पुस्तकालय एवं गतिविधि कार्यक्रम, एकलव्य द्वारा संकलित

अप्रैल 2012 / 3000 प्रतियाँ
कागजः 80 gsm मेपलिथो व 210 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

ISBN: 978-93-81300-42-8
मूल्यः ₹ 35.00

सम्पर्कः **एकलव्य**
ई-10, शंकर नगर बी.डी.ए. कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल 462 016 (मध्य प्रदेश)
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः भण्डारी ऑफसेट प्रिंटर्स, ई-3/12, अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462 016 (मध्य प्रदेश)

बरसात के दिन 5
जब बीमार होते हैं। 5
मैं कल खेत पर... 7
कन्ट्रोल की दुकान 7
भोजन बनाने में 9
वह लड़की... 9
नमस्ते... 10
घटना घटी 11
हमारे खेत में... 11
कुत्ता और पिन्टू 12
नाना और रानी 13
यह मेरे घर का चित्र... 15
तुम्पा ओर गोरेया 15
सइकील की कहानी 16
मैं रास्ते से... 17
हमारे खेत पर... 18
मेरे गाँव के पास... 18
आज की बात 20
क्या आप समझते है... 21
हमारे यहाँ... 22
यह हमारा स्कूल... 22
झँमकुड़ी 23
एक चिड़ियाँ थी... 24
यह एक घर है... 26
हमारे गाँव में एक शेर... 26
मै गर्मी की छूट्टी मे... 28
रमकुड़ी 29
इस संकलन के बारे में 31

योगेश दनोते, छठवीं, देशावाड़ी, ज़िला बैतूल, मध्य प्रदेश

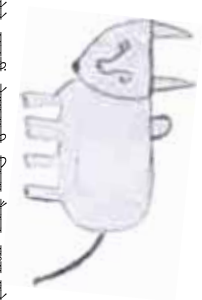

{ÉVÉÉ {É®¨ÉÉ®, +É`Ó´ÉÉ, ¨ÉÉxÉEòb, ÊWÉ±ÉÉ n´ÉÉºÉ, ¨ÉvªÉ |Énä¶É

¤É®ºÉÉ¡É Eò ÊnùxÉ

<xÉ ÊnùxÉÉ ½è¨É ¤É½¡É ¨ÉVÉÉ +É¡ÉÉ ½* ½®ò-¦É®ò ½Ê®ªÉÉ±Éò ½è¨É ¤É½¡É +SUò ±ÉMÉ¡Éò ½* Eò< |ÉEòÉ® EòÒ ÊSÉÊcªÉÉ +É¡Éò ½ +É® SÉ½SÉ½É¡Éò ½* xÉÒ¨É EòÒ {ÉÊkÉªÉÉ ½®ò ½É VÉÉ¡Éò ½ +É® {Éc {É® ËxÉ¤ÉÉÊxÉªÉÉ +É VÉÉ¡Éò ½* ¤É®ºÉÉ¡É Eò ÊnùxÉ ¤ÉMÉÒSÉ ¨É ¡ò±É ¤É½¡É +SUè ±ÉMÉ¡É ½* ½è¨É Ê¨É]ò]ò EòÒ JÉ¶¤É ¤É½¡É +SUò ±ÉMÉ¡Éò ½* ¤É®ºÉÉ¡É Eò ÊnùxÉÉ ¨É Ê®¨É-ÊZÉ¨É {ÉÉxÉÒ ÊMÉ®¡ÉÉ ½ +É® <pvÉxÉ¹É ¦Éò ÊnùJÉÉ< nù¡ÉÉ ½* ½è¨ÉÉ® PÉ® {É® MÉÉ® ¦Éò ÊMÉ®¡Éò ½*

{ÉVÉÉ Ê´É¶´ÉEò¨ÉÉ, +É`ö´Éò,
¨ÉÉxÉEòb, ÊWÉ±ÉÉ nù´ÉÉºÉ, ¨ÉvªÉ |Énù¶É

VÉ¤É ¤ÉÒ¨ÉÉ® ½É¡É ½*

¤ÉÒ¨ÉÉ® ½ÉxÉ {É® ½è¨ÉÉ®É ÊºÉ® nùnù Eò®¡ÉÉ ½* {É® +É® Eò¨É® ¦Éò nùnù Eò®¡É ½* ½è¨É nù´ÉÉ<ªÉÉ ±ÉxÉÒ {Éc¡Éò ½* ¦ÉÉVÉxÉ Eò®xÉ EòÒ ¦Éò <SUÉ xÉ½Ó ½É¡Éò ½* ½è¨ÉÉ®É ¨É½ Eòc´ÉÉ ½É VÉÉ¡ÉÉ ½ +É® `ö¤b ¦Éò ¤É½¡É ±ÉMÉ¡Éò ½* +ÊvÉEò ¤ÉÒ¨ÉÉ® ½ÉxÉ {É® +ÊvÉEò ¤ÉÉ]ö±É ¦Éò ±ÉMÉÉ< VÉÉ¡Éò ½* ¤ÉÒ¨ÉÉ® ½ÉxÉ {É® Ê¤ÉºÉ¡É® ºÉ =`öxÉ Eò <SUÉ xÉ½Ó ½É¡Éò ½* ½è¨É xÉ½Ónù ½Ò xÉ½Ónù +É¡Éò ½* ¤ÉÒ¨ÉÉ® ´ªÉÊÎC¡É EòÉ ¡ò±É-£ò]ò ´É ¦ÉÉVÉxÉ JÉÉxÉÉ SÉÉÊ½ªÉ*

Ê|ÉªÉEòÉ Ê´É¶´ÉEò¨ÉÉ, +É`ö´Éò, ¨ÉÉxÉEòb, ÊWÉ±ÉÉ nù´ÉÉºÉ, ¨ÉvªÉ |Énù¶É

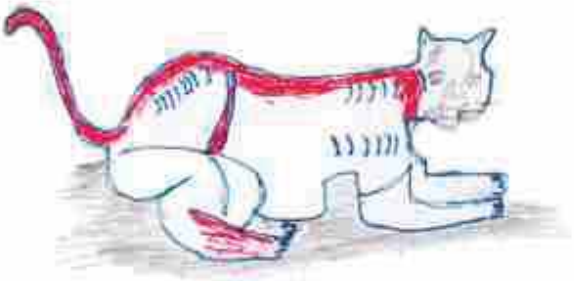

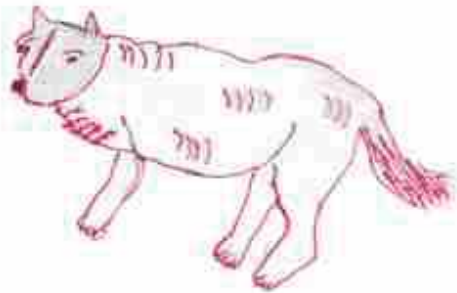

ºÉÊn{É vÉ´É, +É`´ÉÒ, ¤É®`É, ÊWÉ±ÉÉ ¤É¡É±É, ¨ÉvªÉ |Én¶É

मैं कल खेत पर जा रहा था। तभी मैंने जंगली बिल्ली को देखा। वह मुझे देखकर डरकर भागी। और खेत में डर के भागते ही जा रही थी।

कमलेश, छठवीं, महुखेड़ा, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

कन्ट्रोल की दुकान

जब हम कन्ट्रोल की दुकान पर जाते हैं तो हम कुछ न कुछ सामान खरीदते है। कभी-कभी तो हमें कन्ट्रोल की दुकान पर सामान नहीं मिल पाता है। एक बार मैं सोयाबीन का तेल लेने गया था तो वह मुझे नहीं मिला। फिर मैं घर वापस आ गया। मेरे मम्मी-पापा ने मुझे वापस भेजा और कहा यदि सोयाबीन का तेल नहीं है तो हल्दी, शंक्कर, मिर्च, मसाले, चाय-पत्ती लाने को कहा। तो मैं सोयाबीन का तेल नहीं लाया और दूसरे सामान लेकर आ गया।

अशोक, आठवीं, महुखेड़ा, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

सोनम, आठवीं, देशावाड़ी, ज़िला बैतूल, मध्य प्रदेश

भोजन बनाने में

भोजन बनाते समय कई प्रकार की चीजें बनाने को मिलती है जैसेः- रोटी, सब्जी व पराठे आदि। किचन में जाकर बाहर आने का मन ही नहीं करता है क्योंकि पकवान की खुश्बु ही इतनी अच्छी आती है। सब्जियों में तो कई प्रकार के सामान डालते हैं। भोजन के बिना तो हम रह नहीं सकते हैं। गरमा-गरम भोजन खाने में बड़ा मजा आता है। भोजन की खुश्बु लेते ही जोर से भूख लगना शुरू हो जाती है। भोजन बनाने में बड़ा मजा आता है। एक बार भोजन बनाकर देखना कितना मजा आता है।

सोनू, छठवीं, धानीघाटी, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

वह लड़की बहुत सुंदर है। वह मनासा आती है। वह बोलने में बहुत अच्छी है। वह कभी झूठ नहीं बोलती। किसी से झगड़ा नहीं करती है। किसी का बुरा नहीं चाहती। वह लड़की दयालु है। उसका नाम अंजली है। मुझे उस लड़की पर गर्व है।

निलेश सांवलिया, छठवीं, मनासा, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

नमस्ते, मेरा नाम संगीता है। मुझे रांगोली बहुत पसंद है। मुझे रांगोली के सिवा कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। और लगता भी है तो बस पढ़ाई। वैसे आप लोग को मेरी रांगोली अच्छी लगती हो तो भी शुक्रिया और नहीं भी लगती हो तो भी शुक्रिया।

संगीता चौहान, आठवीं, मानकुण्ड, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

घटना घटी

सन् 2 क मे जब हम सातवी कक्षा मे पढते थे। जब हम एक दिन डेम तालाब मे मिट्टी लेने जा रहे थे। तो धनतेरस का दिन था। हम चल दिए। रास्ते मे जब हम जा रहे थे तो एक मोटर साइकिल आ रही थी। मोड़ था हम जा रहे थे। तो मोटर साइकिल वाले ने हमारी साइकिल से टक्कर कर दिया। मोटर साइकिल वाला गलत लाइन पर चल रहा था तो अभिषेक के पेट पर चोट आई और मोटर साइकिल वाले के इंटिकेटर टूट गया और टाँग छुल गई। और हमारे घरवालो को पता चला तो उन्होने उसके हल्दी लगाई और कहा के कैसे टक्कर हुआ तो उसने कहा कि ये गलत राह पर चल रहे थे। जबकि वह ही गलत राह पर चल रहा था। अगर हम वहाँ न होते तो वो बागुड़ से टकराता। हम सही राह पर चल रहे थे।

विमलेश सिमारा, आठवीं, समनापुर, ज़िला होशंगाबाद, मध्य प्रदेश

हमारे खेत में आलू बोए थे। दूसरे दिन ही बन्दर आकर खा गये। तो हमारे पिताजी रोज बन्दर देखने जाया करते। एक दीन मेरे पिताजी बाँस लेकर दौड़े तो बन्दर भाग गये। बाद मे मेरे पिताजी खेत में बैटे थे। वह एक बन्दर आया और उनके ऊपर दौड़ा तो वो घबरा कर भागे। बन्दर ने मे पिताजी को एक तमाचा मारा तो वो और जोर से भागने लगे फिर एक जगह गढ़ड़ा आया उस गढ़ड़े मे मेरे पिताजी का पैर फँस और निकला निकालने की बहुत कोशिश की जब भी नहीं निकला। फिर एक आदमी आया तो उसने पुछा क्या हुआ। मेरे पिताजी बोले मेरे पिछे बन्दर लगे है और मेरा पैर इस गड्ड़े में फँस गया है। तो उसने जौर लगाकर खिंचा तो निकल गया फिर उनको शान्ति मिली। उस व्यक्ति को मेरे पिताजी धन्यवाद दिया।

सतीश चौहान, सातवीं, घटिया गयासुर, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

देवेन्द्र, सातवीं, बरेठा, ज़िला बैतूल, मध्य प्रदेश

कुत्ता और पिन्टू

एक कुत्ता था और उसका दोस्त पिन्टू था। वह दोनों दिन भर खेलते रहते है। पिन्टू अपने दोस्त के साथ बहुत खुश था। अपने मम्मी-पापा की भी नही सुनता। उसके दिमाग में उसके दोस्त के अलावा कुछ भी नही था। वह अपने दोस्त से इतना प्यार करता था की शायद उसका दोस्त भी उसे न भुल पाए। एक दिन वे दोनो सड़क पार कर रहे थे की अचानक एक ट्रक आया और उसका दोस्त कुत्ता मर गया। पिन्टू इस सतमें को सह नही पाया और उसे इतनी तेज बुखार रहती थी। वह दिन भर कुत्ते काहि नाम जपता रहता था।

निशा सेंधव, आठवीं, पोनासा, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

नाना और रानी

एक दीन नाना ने सोचा कि रानी को बहूत डाराहू तो बीटू रानी डर के मेरी गोदी पर आ जाए। लेकिन रानी ने देख ली और नाना जी किपास पहुच गई और नानाजी को डराया और नानाजी डर जए। रात होते समय नाना जी ने सफेद रंग का कपड़ा पेहन कर बीटू रानी के कमरा पर घस पड़ ओ देखा की रानी तो कमरा पर नहीं है लेकिन कहा गयी होगी। छुपकर रानी ने नानाजी को डाराया ओ डर के मारे नानाजी थर-थर कापने लगे।

सोहनलाल बारस्कर, सातवीं, कोटमी, ज़िला बैतूल, मध्य प्रदेश

राधा नारले, छठवीं, मानकुंड, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

खुशबु, छठवीं, नेवरी,
ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

पूजा लोधी, छठवीं, नेवरी, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

जोगेन्द्र व पवित्रा मालवीय, सातवीं, पोनासा, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

यह मेरे घर का चित्र है। मेरे घर पर मेरी बहन रहती है। मेरा एक भाई व तीन बहन है। मेरे माँ, पिताजी और दादी किसान का काम करते हैं। मेरा भाई इंदौर में काम करता है। और मैं स्कूल में पढ़ने आती हूँ। अब मुझे और नहीं आता है।

सोनू अटारिया, छठवीं, मनासा, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

तुम्पा ओर गोरेया

तुम्पा के पिता रेल्वे मे काम करते थे। उसका परिवार रेल्वे क्वार्टर मे रहते है। ओर आजकल वे लोग पटना है। तुम्पा के पिता कोलकाता मे अपना तबादला करने की कोशिश मे है। काफी कोशिश के बाद अंत तबादला हो गया। तुम्पा बहुत खुश क्योकि उसके दादा-दादी ओर चाचा-चाची ओर भाई-भहन कोलकाता मे रहते है।

पवित्रा मालवीय, सातवीं, पोनासा, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

मनीष भुरश्यामकर, आठवीं,
माली सिलपटी, ज़िला बैतूल, मध्य प्रदेश

सइकील की कहानी

मे एक दिन बाजार गया था। मेरे साथ माताजी भी गई थी। मे साथ सइकील भी ले गया था। अचानक मेरी सइकील का टायर फटने के कारण बाजार वाले व्यकी चोक गए। जसके कारण भोत सारी चीज बिखर गई। किसी का आलू लुड़का तो किसी का बेंगन बिखरी। एक लोग की तो बकरी कार पर जा बैठी। मे मोटर सइकील बाल बाल बच गया। अगर मोटर ड्रावर ने बीरीक ना लागाय होता तो बड़ी घटना हो जाती। एक अदमी के पेर आलू पर पड़े और ऊ फिसल गया। मेने विद्यालय जाकर इस घटना का शिक्षक को बताया तो बच्चे हँसने लगे। तो शिक्षक ने कहा तो लोग को मे कल बताऊँगा।

विजय चौहान, सातवीं, धानीघाटी, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

मैं रास्ते से गुजर रहा था। मुझे एक पुतला दिखाई दिया। मैं बहुत डर गया। वह पेड़ पर लटका हुआ था। उसके गले में एक रस्सी भी थी। उसके कारण मुझे बहुत मार भी खानी पड़ी थी।

रचना व चित्रः इकबाल, छठवीं, महुखेड़ा,
ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

हमारे खेत पर एक पेड़ था। वहां पर मैं झूले में झूल रहा था। एक दिन मैं पेड़ के ऊपर चढ़ा तो मैंने सांप देखा। मैं वहाँ से भागा। फिर कभी नहीं गया।

राहुल अटाड़िया, सातवीं, लिम्बोदा, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

मेरे गाँव के पास एक गाँव है। वहाँ पर मेला लगता है। एक दिन मैं मेला देखने गया। मैंने मेले में तरह-तरह की मिठाइयां देखी। अनेक खिलौने, झूले, पान की दुकान आदि सामान देखा। मेले में झूले बहुत तेज घूमते हैं। मेले में बहुत सारे मनुष्य आते हैं। मेले में टाकीज भी लगता है।

बालकृष्ण, छठवीं, धानीघाटी, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

राहुल अंगरिया, छठवीं, शिवपुर मुण्डला, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

बादल, छठवीं, धानीघाटी,
ज़िला देवास, मध्य प्रदेश